पाठ–2

मीराबाई

(सन् 1498–1573)

कवयित्री–परिचय

मीराबाई हिंदी भक्तिकाल की कृष्ण भक्त कवयित्री हैं। उनके काव्य में कृष्ण भक्ति के साथ साथ थोथी कुल मर्यादा तथा अन्धी नैतिकता के प्रति विद्रोह है। उन्होंने सोलहवीं शती में नारी स्वतन्त्रता का बिगुल भी बजा दिया। उन्हें नारी विमर्श की महान क्रान्तिकारी कवयित्री के रूप में देखा जा सकता है।

मीरा का जन्म सन् 1498 में जोधपुर (राजस्थान) के कुड़की गाँव में राव रत्नसिंह राठौर के घर हुआ। बचपन में ही माँ के निधन के कारण इनका पालन–पोषण इनके दादा दूदा जी ने किया। मीरा के दादा जी श्री कृष्ण के भक्त थे। उनकी कृष्ण भक्ति से प्रभावित होकर मीरा बचपन से ही श्री कृष्ण भक्ति में लीन हो गई। मीरा का विवाह मेवाड़ के राणा साँगा के सबसे बड़े पुत्र भोजराज के साथ हुआ। परन्तु विवाह के कुछ वर्ष बाद ही यह विधवा हो गई। इस दुखद घटना ने मीरा को संसार से विरक्त कर दिया। वैधव्य ने भक्ति के संस्कारों को पल्लवित किया और मीराबाई उस समय के

राजघरानों की मर्यादा को छोड़ साधु सन्तों के बीच रहने, मन्दिरों में कीर्तन करने और नाचने गाने लगी। राजपूती शान के विरुद्ध आचरण से परिवार के सभी लोग मीरा से रुष्ट हो गए। इनके देवर ने तो कई बार मीरा को मरवाने की चेष्टा भी की, पर श्री कृष्ण जी की कृपा से मीरा हर बार बच गई। परिवार के लोगों के व्यवहार से दु:खी होकर मीरा वृन्दावन और फिर द्वारिका चली गयीं। वहीं उन्होंने देह त्याग दी। इनकी मृत्यु का वर्ष विभिन्न विद्वानों ने अलग-अलग बताया है।

रचनाएँ : मीराबाई की 'राग गोविन्द', 'राग सोरठा के पद', 'नरसी जी का मायरा', 'गीत गोविन्द की टीका' तथा मीरा की पदावली — ये रचनाएँ मानी जाती हैं। इनमें से 'मीरा पदावली' मीराबाई की प्रमुख रचना है। उनकी भक्ति में माधुर्य भाव है। शैली मुक्तक है जिसमें गेय तत्व है। भाषा में राजस्थानी, मारबाड़ी, ब्रज और गुजराती का संगम है।

मीराबाई (पदावली)

बसौ मेरे नैनन में नन्द लाल।
मोहनि मूरति साँवरी सूरति नैना बनै विसाल।
मोर मुकुट मकराकृत कुंडल अरुण तिलक दिये भाला
अधर सुधारस मुरली राजति उर वैजन्ती माल।
छुद्र घंटिका कटि तट सोभित नुपूर शब्द रसाल।
मीरा प्रभु सन्तन सुखदाई भक्त बछल गोपाल।। (1)

मेरे तो गिरिधर गोपाल, दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई।
तात मात भ्रात बंधु, आपनो न कोई।
छांड़ि दई कुल की कानि, कहा करै कोई।
संतन ढिग बैठि बैठि, लोक लाज खोई।
अँसुअन जल सींचि सींचि, प्रेम बेलि बोई।
अब तो बेलि फैल गई, आनंद फल होई।
भगत देखि राजी भई, जगत देखि रोई।
दासी मीरा लाल गिरधर, तारौ अब मोही। (2)

सप्रसंग व्याख्या

(1) बसौ मेरे नैनन में नंद लाल।

मोहनि मूरति साँवरी सूरति नैना बनै विसाल।

मोर मुकुट मकराकृत कुंडल अरुण तिलक दिये भाल।

अधर सुधारस मुरली राजति उर वैजन्ती माल।

छुद्र घंटिका कटि तट सोभित नुपूर शब्द रसाल।

मीरा प्रभु सन्तन सुखदाई भक्त बछल गोपाल।। (1)

शब्दार्थ: नंदलाल = नंद के बेटे श्री कृष्ण; विसाल = विशाल, बड़े; अरुण = लाल; भाल = माथा, मस्तक; अधर = होंठ; उर = हृदय; कटि = कमर; नुपूर = घुंघरू; रसाल = मीठा, मोहक; बछल = वत्सल, रक्षक

प्रसंग: प्रस्तुत पद मीराबाई की रचना 'पदावली' में से लिया गया है। इस पद में मीराबाई ने श्री कृष्ण की मन को मोहित करने वाली छवि का वर्णन करते हुए उसे अपने नयनों में बसाने का वर्णन किया है।

व्याख्या: मीराबाई कहती हैं कि हे नंद के पुत्र श्री कृष्ण, आप मेरी आप मेरी आँखों में बस जाओ। आपकी मन को मोहित करने वाली सुन्दर छवि, साँवली सूरत व बड़ी-बड़ी आँखें हैं। आपने मोर के पंखों का बना मुकुट व मकर की आकृति के कुंडल धारण किये हैं। आपके माथे पर लाल रंग का तिलक शोभा बढ़ा रहा है। आपके होठों पर अमृत के समान मीठी ध्वनि निकालने वाली मुरली है और हृदय पर वैजन्ती माला सुशोभित है। छोटी-छोटी घंटियाँ आपकी कमर पर बंधी हैं, पाँवों में छोटे-छोटे घुँघरू बँधे हैं, जिनकी ध्वनि मन को आकर्षित करती है। मीरा के प्रभु श्री कृष्ण का यह रूप संतो को सुख देने वाला तथा भक्तों की रक्षा करने वाला है।

(2) मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई।

जाके सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई।

तात मात भ्रात बंधु, आपनो न कोई।

छांड़ि दई कुल की कानि, कहा करै कोई।

संतन ढिग बैठि बैठि, लोक लाज खोई।

अँसुअन जल सींचि सींचि, प्रेम बेलि बोई।

अब तो बेलि फैल गई, आनंद फल होई।

भगत देखि राजी भई, जगत देखि रोई।

दासी मीरा लाल गिरधर, तारौ अब मोही। (2)

शब्दार्थ: गिरिधर = गोवर्धन पर्वत को धारण करने वाला; कानि = मर्यादा; राजी = प्रसन्न; तारौ = उद्धार करना, तारना

प्रसंग: प्रस्तुत पद मीराबाई की रचना 'पदावली' में से लिया गया है। इसमें मीराबाई ने भगवान श्री कृष्ण को अपना सर्वस्व मानकर उनके प्रति अपनी अनन्य भक्ति भावना का परिचय दिया है।

व्याख्या: मीराबाई जी कहती हैं कि गोवर्धन पर्वत को धारण करने वाले श्री कृष्ण ही मेरे अपने हैं- दूसरा कोई मेरा नहीं है, जिनके सिर पर मोर के पंखों का सुन्दर मुकुट है, वही मेरे पति हैं। माता-पिता, भाई, सगा-संबंधी मेरा कोई अपना नहीं है। मैंने कुल की मर्यादा छोड़ दी है- मुझे अब किसी की परवाह नहीं है। सन्तों की संगति में रह कर मैंने लोक लाज को छोड़ दिया है। श्री कृष्ण रूपी प्रेम की बेल को मैंने अपने आँसुओं के जल से सींचा है। अब तो प्रेम की वह बेल खिल गई है और उस पर भक्ति के मीठे-मीठे फल लगे हैं, जिससे आनन्द की प्राप्ति होगी। मीरा जी कहती हैं कि भक्तों को देखकर उन्हें खुशी मिलती है- संसार का झमेला तो दुःख ही देने वाला है जिसमें रोना-धोना ही है। मीराबाई श्री कृष्ण से प्रार्थना करती हैं कि वे उनकी दासी हैं -अब संसार रूपी समुद्र से उनका उद्धार किया जाए।

अभ्यास

(क) विषय-बोध

1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए-

(1) प्र- श्री कृष्ण ने कौन-सा पर्वत धारण किया था?

उत्तर- श्री कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत धारण किया था।

(2) प्र- मीरा किसे अपने नयनों में बसाना चाहती है?

उत्तर- मीरा श्री कृष्ण को अपने नयनों में बसाना चाहती है।

(3) प्र- श्रीकृष्ण ने किस प्रकार का मुकुट और कुंडल धारण किए हैं?

उत्तर- श्रीकृष्ण ने मोर के पंखों का मुकुट और मकर की आकृति के कुंडल धारण किए हैं।

(4) प्र- मीरा किसे देखकर प्रसन्न हुई और किसे देखकर दुःखी हुई?

उत्तर- मीरा भक्तों को देखकर प्रसन्न हुई और सांसारिक मोह-माया में फँसे हुए लोगों को देखकर दुःखी हुई।

(5) प्र- संतों की संगति में रहकर मीरा ने क्या छोड़ दिया?

उत्तर- संतो की संगति में रहकर मीरा ने कुल की मर्यादा तथा लोक लाज को छोड़ दिया।

(6) प्र- मीरा अपने आँसुओं के जल से किस बेल को सींच रही थी?

उत्तर- मीरा अपने आँसुओं के जल से श्री कृष्ण की प्रेम रूपी बेल को सींच रही थी।

(7) प्र- पदावली के दूसरे पद में मीराबाई गिरिधर से क्या चाहती है?

उत्तर- पदावली के दूसरे पद में मीराबाई श्री कृष्ण से अपना उद्धार चाहती है।

(ख) भाषा-बोध

(1) निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखें:

भाल : माथा, मस्तक

प्रभु : ईश्वर,भगवान

जगत : संसार, दुनिया

वन : जंगल, कानन

(2) निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए:

कुल : वंश:- रामजी सूर्य के कुल में पैदा हुए।

कूल : किनारा:- नदी का कूल बहुत शांत दिखता है।

कटि : कमर:- श्री कृष्ण की कटि में बंधी करधनी में छोटी-छोटी घंटियाँ सुशोभित हैं।

कटी : काटना:- मेरी पतंग कटी थी।

प्रस्तुतकर्ता :

गुरप्रीत कौर (हिंदी अध्यापिका)

सरकारी हाई स्कूल लापराँ , लुधियाना

संयोजक :

विनोद कुमार(हिन्दी शिक्षक),

सरकारी हाई स्कूल, बुल्लेपुर(खन्ना),लुधियाना